किताब है - नीरोग होने का अद्भुत उपाय,

अध्याय है - ३,

बिसय है - ब्रह्मज्ञान-चिकित्सा

"सर्व खल्विदंब्रह्म" वेद के, इस वचन के अनुसार सब कुछ और सारा संसार ईश्वर है। यदि ईश्वर सब है और ईश्वर विश्वासरुपा है तो "विश्वास" ही सब कुछ हुआ। अत: तुम्हारा जैसा विश्वास है, वही तुम हो, वही तुम्हारे सामने है और वैसा ही संसार है । यदि यह ठीक है, तो क्यों कहते हो कि हम रोगी हैं ? यदि अपने मानने ही से तुम रोगी हुए हो, तो अपने को नीरोग क्यों नहीं मानते ? वह कभी महात्मा नहीं है, जो शरीर को अपवित्र, अशुद्ध और रोगी कहता है। शरीर स्वभाव से ही नीरोग, पवित्र और शुद्ध है-इस पर विश्वास रक्खो और नित्य इसी की भावना करो।

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात ते, सिलपर परत निशान ॥

तुम्हें हमारे वाक्यों पर अविश्वास है, तब भी नित्य अभ्यास करो । नित्य सबेरे उठकर इस विषय का मनन करो कि हम नीरोग हैं। अभ्यास करने से, भावना या विश्वास दृढ़ हो जाता है ।

सच्ची बात तो यह है कि केवल सूक्ष्म शरीर ही भावनामय नहीं है, स्थूल शरीर भी भावनामय है। जिस तरह सूक्ष्म शरीर मनोमय और कल्पना मात्र है उसी तरह स्थूल शरीर भी है। सिद्धान्त यह है कि सूक्ष्म शरीर ही दृढ़ होकर स्थूल शरीर हो जाता है, छोटा ही बड़ा हो जाता है। हमने अपनी रची हुई पुस्तक 'वेदान्त–सिद्धान्त' में यह स्पष्ट किया है कि यह जाग्रत की सृष्टि भी स्वप्नवत् ही है। जैसे स्वप्न की सृष्टि भ्रम और कल्पना-मात्र है, उसी तरह जाग्रत् की सृष्टि भी कल्पना मात्र है। जो लोग वेदान्त का मनन कर चुके हैं,

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

वे अच्छी तरह जानते हैं कि यह सृष्टि आत्ममय, ईश्वरमय है। अर्थात् यह स्थूल जाग्रत् या जाग्रत् संसार दूसरा नहीं है, किन्तु सब कुछ ब्रह्म ही है। ब्रह्म-भिन्न जो कुछ प्रतीत होता है वह भ्रम से प्रतीत होता है। वास्तव में कोई भिन्न पदार्थ संसार में नहीं है सव ब्रह्म ही है । अच्छा, तो यह स्थूल शरीर अन्य कैसे हो सकता है; क्योंकि स्थूल शरीर संसार से बाहर नहीं है, यदि सारा संसार वही निरामय निर्विकार और निरंजन ब्रह्म है, तो शरीर दूसरा कैसे हो सकता है ? अब विचारने की बात है यदि शरीर निरामय, नीरोग, निर्विकार और ब्रह्ममय है तो इसमें रोग कहाँ से आया ? हम रोगी और अपवित्र अपनी भावना से बने हैं; नहीं तो यह शरीर परम पवित्र, परम नीरोग और परमात्मा है। क्या परमात्मा में भी विकार है ? कभी नहीं । फिर, शरीर में रोग कहाँ से आया ? शरीर रोगी होने की सम्भावना तब थी, यदि वह परमात्मा न होता। परन्तु जो परमात्मा है - ईश्वर है - ब्रह्म है - वह कदापि रोगी नहीं हो सकता । आश्चर्य है कि बहुत से वेदान्ती भी अपने शरीर को रोगी मानते हैं। जो लोग वेदान्त नहीं जानते, वह शरीर को रोगी मानते तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। पर वेदान्त मानकर भी शरीर को रोगी मानना कैसे हो सकता है ? बहुत से वेदान्ती कहते हैं कि शरीर ब्रह्म नहीं हैं। शरीर ब्रह्म से पृथक कैसे होगा ? वेदान्त का तो मत है कि यह सारा दृश्य भ्रम से भासता है; वास्तव में सब ब्रह्म ही ब्रह्म है । वेदान्त मत से ब्रह्म के सिवा दूसरी वस्तु है ही नहीं, वहाँ पर द्वेत् का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि दूसरी कोई वस्तु है ही नहीं, तो शरीर ब्रह्म है, ब्रह्म शरीर है और यदि यह शरीर ब्रह्म से पृथक नहीं तो इसमें रोग कहाँ से आया ? तुम परम शुद्ध, परम पवित्र और स्वभाव से ही नीरोग हो । बस, आज से तुम अपने को रोगी माना छोड़ दो सत्य को ग्रहण करो, असत्य का त्याग करो। तुमने उसके विपरीत असत्य का ग्रहण किया है और सत्य का त्याग किया है, इससे रोगी हो । सत्य को ग्रहण करने वाला कभी दुखी नहीं हो सकता । वह सत्य हो नहीं

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

सकता, जिसके कारण तुम रोगी बने हो । सत्य का अवलम्बन न कर अपने को नीरोग मानो ,देखो तो कैसा आनन्द आता है ! तुम वह हो जिसको रोग छू तक नहीं सकता । तुम्हारे सामने रोग उसी तरह से नहीं टिक सकता, जैसे सूर्य के सामने अंधकार । बस, इस ज्ञान को धारण कर, इस पर दृढ़ विश्वास कर अपने हृदय से रोग की भावना निकाल कर फेंक दो । नीरोग होने का इससे बढ़कर दूसरा उपाय और क्या हो सकता है ?

तुम शरीर को ईश्वर न मानो, न सही। पर ईश्वर को उसमें व्यापक मानते हो या नहीं ? तुम्हारा मजहबी ईश्वर एक देशी है वा सर्वव्यापक ? ईश्वर एक देसी हो, तो ईश्वर ही काहे का ? एक देसी तो हो नहीं सकता। वह सर्वव्यापक है, वह शरीर में भी अवश्य है, शरीर के रोम-रोम में, अणु-अणु में ईश्वर व्यापक है। भला जिस शरीर के अणु-अणु में वह निर्विकार, पवित्र और निरामय परमात्मा व्यापक है, वह शरीर कभी रोगी हो सकता है ? क्या जिस जगह सूर्य की किरणें फैल रही है वहीं, उसी जगह अन्धकार भी रह सकता है ? क्या जहाँ शीतलता व्याप रही है, वहीं उष्णता भी ठहर सकती है ? क्या जहाँ पर परमात्मा है, वहीं रोग भी रह सकता है ? क्या सूर्य में अन्धकार को नाश करने की शक्ति है, पर ईश्वर में रोग को नाश करने की शक्ति नहीं है ? क्या जहाँ पर विकार और रोग व्यापक है, वहीं पर निर्विकार ईश्वर भी व्यापक है ? क्या जिस शरीर में निर्विकार परमात्मा व्यापक है, उसी शरीर में रोग और विकार भी रह सकता है ? कभी नहीं। तो; क्या रोगी के शरीर में वह सर्वव्यापक परमात्मा नहीं है ? नहीं, यह तो हो ही नहीं सकता। यदि वह इन असंख्य रोगियों के शरीर में नहीं, तो फिर वह सर्वव्यापक कैसे है ? अतः यदि परमात्मा का सर्वव्यापक होना सिद्ध है, तो रोग केवल हमारी भावना और कल्पना है। जैसे, स्वप्न में सर फूट गया और हम रो रहे हैं, पर क्या सचमुच सर फूटा है ? कभी नहीं । स्वप्न में भ्रम से विदित होता था, वास्तव में वह

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

फटा न था, वह तो केवल हमारी कल्पना थी; और कुछ नहीं। बस, यही दशा जाग्रदवस्था के रोग की भी है। "हम रोगी हैं", यह हमारी झूठी भावना और कल्पना है। हम अपनी इस झूठी भावना से रोगी बने हैं, नहीं तो जिस शरीर में वह निरामय व्यापक है, वहाँ रोग कहाँ ? तुम दृढ समझ लो, सत्य जानो, तुम्हारे पास रोग नहीं आ सकता । तुम व्यर्थ में अपने को रोगी मानकर घूल ते जाते हो। जरा सोचो तो तुम्हारे में रोग कहाँ है ? छोड़ो इस भावना को, और स्मरण करो अपनी आत्मशक्ति को । बस, सर्वथा नीरोग हो जाओगे।

रोग क्या वस्तु है? रोग में इतना बल नहीं है कि तुम्हें दु:ख दे सके। रोग में शक्ति कहाँ ? रोग तो निर्बल है, शक्तिहीन है, निजीव है । रोग जिसके पास जाता है, वह शक्तिहीन हो जाता है। शक्तिहीनता या निर्बलता ही रोग है। निर्वलता में बल कैसा है ।रोग, रोग है; तुम जीवन हो । तुम्हारा सामना रोग करे, यह बड़े आश्चर्य की बात है । तुम आत्मा हो- और आत्मा, शक्ति तथा बल का केन्द्र है। सारी शक्तियाँ आत्मा से ही उत्पन्न होती है। फिर, जिस शरीर के रोम-रोम में आत्मा व्यापक है, उस शरीर का मुकाबिला रोग क्या करेगा ? अगर आया है, तो आप से आप से मिट जायेगा । हमें दृढ़ और निर्भय रहना चाहिये। रोग से डरना जीवनहीन का काम है। जो रोग स्वयं निर्जीव, निर्वल और शक्तिहीन है वह क्या तुम से युद्ध कर सकता है ? कभी नहीं । रोग से डरने की आदत छोड़ दो, वह आप से आप चला जायेगा, अवश्य चला जायेगा । चला क्या जायेगा, वह आया ही नहीं, उसकी सृष्टि ही नहीं हुई। पवित्र निर्बिकार निरामय और दयालु ईश्वर रोग, दोष, पाप और दु:ख को नहीं बना सकता। आनन्दकंद सच्चिदानन्द परमेश्वर से दु:ख और रोग की सृष्टि नहीं हो सकती, और जिसे ईश्वर ने नहीं बनाया संसार में उसकी सृष्टि कैसे होगी ? कहते हैं कि ईश्वर के बिना एक तिनका भी नहीं हिल

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

सकता। बड़े आश्चर्य का विषय है कि लोग अपनी झूठी और अशुभ भावना तथा कल्पना से रोग और दोष को बनाकर इससे दुखी हो रहे हैं।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.